नये कलेवर में विज्ञान प्रगति

विज्ञान प्रगति पत्रिका का जनवरी 2016 अंक नये कलेवर के साथ पढ़ने को मिला। वर्ष 2016 के प्रथम माह व प्रथम अंक ने यह

साबित कर दिया कि अगला अंक कैसा होगा। जैसे सूर्योदय को देखकर यह आकलन किया जा सकता है कि आज का दिन कैसा होगा विज्ञान प्रगति ने 'फिर लौटना होगा पारम्परिक खेती की ओर' आलेख प्रकाशित कर यह दर्शाने का प्रयास किया है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ के अधिकांश लोग कृषि पर निर्भर हैं ऐसे में यदि नई तकनीकी के साथ पारम्परिक खाद्य पदार्थों से खेती की जाए तो यह समाज के लिए उपयुक्त होगा। आज भी लोग अपने खेतों में पारम्परिक खाद्य का उपयोग कर अच्छी फसल उपजाते हैं। आरोग्य सलाह के अंतर्गत 'अतिसार एवं भोजन विषाक्तता' लेख महत्वपूर्ण जानकारी लिए था। नई-नई जानकारियों के लिए विज्ञान प्रगति पत्रिका के सम्पादक मंडल को बहुत-बहुत धन्यवाद। साथ ही सम्पादक मंडल, लेखकों पाठकगण एवं पत्रिका के शुभचिन्तकों को नये वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. सत्य प्रकाश, सुपुत्र डॉ. राम विष्णु प्रसाद
ग्राम-बरवां, पो.-मीरगंज, जिला-गोपालगंज (बिहार) 841438, [मो. : 09471040259;
ई-मेल : satyaprakashsahara@gmail.com]

महत्वपूर्ण अंक

विज्ञान प्रगति का जनवरी 2016 अंक पढ़कर मुझे जो खुशी हुई, उसे शब्दों में नहीं बाधा जा सकता। खासकर इस अंक में प्रकाशित आमुख कथा 'फिर लौटना होगा पारंपरिक खेती की ओर' मन प्राणों को एक अपूर्व आनन्द

आभा में स्नात कर गया। वास्तव में आज जिस कदर खाद्य पदार्थों में दिनानुदिन शुद्धता का अभाव होता जा रहा है और हर तरफ प्रदूषण की वृद्धि देखी जा रही है, वह सिर्फ मानव ही नहीं, पूरे जीव जगत के लिए बेहद चिन्तनीय एवं विचारणीय विषय बन गया है। इस विकट परिस्थिति से निजात पाने के लिए हर हाल में हमें जैविक खेती की ओर मुखातिब होना पड़ेगा, अन्यथा कौन-कौन से भविष्य के दुष्परिणाम हमें झेलने होंगे, कहा नहीं जा सकता। पत्रिका में प्रकाशित अन्य दो लेखों 'आखिर क्यों जरूरी है जैविक खेती' तथा 'आइए झाँके भविष्य में' ने भी पत्रिका के सौष्ठव में चार चाँद लगाए हैं। निर्भीक संपादन और पत्रिका का बहुआयामी संस्कार प्रशंसनीय, संरक्षणीय एवं अभिनन्दनीय है।

श्री नरेश जनप्रिय (प्र.अ.)
बी.पी.एस.म.वि. गालिमपुर, पो.-बैदाचक,
भाया-अमरपुर, जिला-बाँका 813101 (बिहार)
[मो. : 09431688887

रोचक अंक

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ और मुझे इसका प्रत्येक अंक रोचक, अद्वितीय

एवं ज्ञानवर्द्धक लगता है। मैं विज्ञान प्रगति को दिव्य ज्ञान की ज्योति मानता हूँ क्योंकि इस पत्रिका के माध्यम से प्राप्त होने वाली नवीन जानकारियाँ विद्यार्थियों के साथ-साथ प्रत्येक वर्ग एवं विषय के व्यक्तियों के लिए बहुत उपयोगी और ज्ञानवर्द्धक होती हैं।

श्री विमल वर्मा
मोहल्ला दुर्गाप्रसाद, निकट कोल्ड स्टोर, बीसलपुर,
जिला-पीलीभीत 262201 (उ.प्र.)

ज्ञानवर्द्धक पत्रिका

जनवरी 2016 के अंक में प्रकाशित लेख 'सवाल जब जब-जवाब तब तब' बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक लगा। इसके अन्तर्गत कुछ प्रश्नों के उत्तर बहुत ही रोचक और

ज्ञानवर्धक हैं। इसी अंक में प्रकाशित एक अन्य लेख 'फिर लौटना होगा पारंपरिक खेती की ओर' बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक लगा। यह तकनीक आधुनिक समय की खेती में बदलाव के लिए अत्यंत ही आवश्यक तथा उपयोगी सिद्ध हो सकती है। आशा है कि आप भविष्य में भी इसी प्रकार के लेख प्रकाशित करते रहेंगे और हमारा ज्ञान बढ़ाते रहेंगे। यह पत्रिका छात्रों के लिए अति उपयोगी सिद्ध हो रही है। इसी अंक में प्रकाशित लेख 'अतिसार एवं भोजन विषाक्तता' को प्रकाशित करने के लिए हम आपके अत्यंत आभारी हैं।

श्री सुमित कुमार
शोध छात्र, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) 249404

प्रेरणादायक पत्रिका

मैं पिछले कई वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे

नवीन कार्यों को आम जनता तक पहुँचाने में विज्ञान प्रगति अहम् भूमिका निभा रही है। नए साल में विज्ञान प्रगति का रूप अलौकिक हो और आपका सहयोग हमारे लिए प्रेरणादायक बना रहे यही हमारी कामना है। जनवरी 2016 के अंक में जैविक खेती, कीट नियन्त्रण, ईमोजी के बारे में पढ़कर महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ। मैंने काशीफल से एल्कोहॉल तथा कूड़ा करकट तथा यूकेलिप्टस की पत्तियों से बैटरी चार्ज की तथा दूध की नकली व असली की पहचान अपनी प्रयोगशाला में की। इन सभी कार्यों के लिए मैं विज्ञान प्रगति का बहुत आभारी हूँ। विज्ञान प्रगति के बताए मार्ग पर चलकर मैंने बहुत कुछ सीखा व सिखाया।

श्री उपेन्द्र प्रताप सिंह भदौरिया,
सुपुत्र श्री अतरपाल सिंह (अध्यापक)
गांव-निवाड़ रवास, पो.-मानपुर,
जिला- व तहसील-मुरादाबाद 244001 (उ.प्र.)
[मो. : 8954215513;
ई-मेल : upendersingh234@gmail.com]